अपनी दुकान : एक सफल प्रयोग

जुही जैन

(सबला के माध्यम से हमारी कोशिश यह रहती है कि हर अंक में महिलाओं की हिम्मत और मेहनत की घटनाएं आपके साथ बांटें। साथ ही महिलाओं को संगठित करने वाले संगठनों से आपका परिचय कराएं। इसका मूल उद्देश्य है कि आप अपने इलाकों में औरतों को संगठित कर सामूहिक प्रक्रियाओं को बढ़ावा दे पाएं। इस अंक में भी हम आपको इसी तरह की एक सच्ची घटना के बारे में बता रहे हैं। तो आइए, चलें हरियाणा की ओर।)

हरियाणा हमारे देश का एक बहुत ही हरा-भरा हिस्सा है। यह किस्सा इसी हरे-भरे प्रदेश के छोटे से जिले रेवाड़ी का है। रेवाड़ी जिला एक बहुत ही गरीब और पिछड़ा इलाका है। यहां पर पढ़े-लिखे लोगों की संख्या बहुत कम है। औरतों को लिखाने-पढ़ाने का तो यहां रिवाज ही नहीं है। इलाका पथरीला और पहाड़ी। उस पर सबसे ज़्यादा किल्लत पानी की। जहां पीने को पानी नहीं मिले, वहां खेती के वास्ते पानी कहां से लाएं। जिंदगी कठिन और मायूस। खैर, जैसे-तैसे गुजारा चल ही जाता था।

ऐसा कब तक चलता!

कोई न कोई उपाय तो करना ही था। आखिर इंसान हैं। जीने का साधन तो चाहिए। सबने अपना-अपना दिमाग लगाया। पंचायत बैठी। प्रस्ताव पास हुआ। तय हुआ पानी की व्यवस्था हो जाए तो खेती करेंगे। सरकार ने पंचायत की बात सुनी। पाईप लाईन के सहारे पानी की व्यवस्था करने का ऐलान हुआ। एक आस बंधी। पर पानी नहीं आया।

मर्द कुछ तो पढ़े-लिखे थे। कुछ बगैर पढ़े। तय किया, शहर जाएंगे। मजदूरी करेंगे। कुछ तो गुजर-बसर होगी। बस, ये भी चल दिए काम की तलाश में। छः महीने, साल भर पैसा भेजा। फिर धीरे-धीरे ये भी बंद हो गया।

हिम्मत औरतों की

पीछे रह गई औरतें। बगैर लिखी-पढ़ी। घूंघट की ओट में रहने वालीं। करें तो क्या करें। शहर की होतीं तो काम करने निकलतीं। घर-परिवार, बच्चों की जिम्मेदारी अब पूरी तरह उन पर आ पड़ी। जो घर में था उससे कब तक गुजारा चलता। रखे-रखे तो भरे घड़े भी खाली हो जाते हैं।

सबने मिलकर तय किया। हम भूखे नहीं मरेंगे। हाथ पर हाथ धरकर भी नहीं बैठेंगे। उनमें से एक थी चिंतामनी देवी। खोरी गांव में उसका पीहर था। उसका भाई खोरी गांव में काम करने वाली संस्था का कार्यकर्त्ता था। चिंतामनी अपने साथ दो औरतों को लेकर खोरी गई। हरियाणा सोशल वर्क और रिसर्च सेंटर के बारे में पता किया। संस्था के अध्यक्ष श्री सुन्दर लाल से

मिलीं। अपनी आपबीती सुनाई। संस्था ने इन औरतों की तकलीफ महसूस की। साथ ही एक योजना तैयार की गई।

संस्था ने राह दिखाई

संस्था ने रेवाड़ी के दस सबसे गरीब गांव चुने। हरेक गांव से कम से कम एक औरत को संस्था में काम दिया गया। काम के दौरान इस औरत को दरी और गलीचे बुनने का काम भी सिखाया गया। इस एक महिला ने अपने गांव जाकर दूसरी औरतों को भी यह काम सिखाया। हर गांव में संस्था ने इन औरतों की मदद से एक दुकान खोली। दुकान का नाम था 'अपनी दुकान'।

इस दुकान से औरतें गलीचे बनाने के लिए कच्चा माल लेतीं। साथ ही गलीचे बनाकर इसी दुकान में बेचतीं। जब दस-पंद्रह दरियां इकट्ठी हो जातीं तब ये सारी दरियां संस्था की मदद से बाज़ार में बेची जातीं। जो भी मुनाफा होता वह 'अपनी दुकान' के साझे खाते में जमा किया जाता। इस फंड से जरूरत के समय औरतों को मदद मिलती। काम चल निकला। एक औरत एक महीने में पांच दरी और चार गलीचे बना पाती। इससे उसे 400 से 600 रुपये तक की आमदनी होती।

दुख के दिन बीते री

इस योजना से रेवाड़ी के पचपन गांवों की छः सौ औरतों ने फायदा उठाया। संस्था ने लड़कियों के लिए टाइप, दफ्तर का काम, फोटोग्राफी आदि सिखाने की भी व्यवस्था की। इस काम को सीख कर लड़कियां आत्मनिर्भर बन रही हैं। इससे कच्ची उम्र में शादी का मसला भी काफी हद तक हल हुआ है। साथ ही हर गांव में एक महिला विकास दल भी शुरू किया गया है। गांव की सभी औरतें

इस दल की सदस्याएं होती हैं। कोई भी औरत मीटिंग बुला सकती है। फैसले भी मिलकर ही लिए जाते हैं। दल ने पानी के हैंडपंप, सिलाई सेंटर और गोबर गैस के चूल्हे गांव में सरकारी मदद से लगवाए हैं। रेवाड़ी के तिरपन गांवों में आठ सौ चूल्हे अब तक लग चुके हैं।

हम हुईं कामयाब

आज रेवाड़ी की औरतें अपने पैरों पर खड़ी हैं। अपना घर चलाती हैं। बच्चों की देखभाल भी करती हैं। और पैसे भी कमाती हैं। आज घर में उनका मान है। फैसले लेने में बराबर की भागीदारी है। घूंघट में वो अब भी रहती हैं। पर घूंघट की ओट से बात भी करती हैं। उनकी साझी सफलता का सेहरा किसी और के सिर नहीं, उनके अपने सिर बंधा है। इन औरतों का यह अनुभव मिसाल है हमारे सामने। यह साबित करता है कि गांव छोड़कर शहर भाग जाना समस्या का समाधान नहीं है। न ही रो पीटकर भगवान के भरोसे रहने से परेशानी दूर होती है। परेशानी का सामना अगर हिम्मत से किया जाए तो जीवन बेहतर बनता है। साथ ही शक्ति और साहस दुगुना होता है। तो फिर इस मिसाल से हमने क्या सीखा? यही—

हममें हिम्मत हममें ताक़त
हममें पूरा दम है
किसने कहा कि औरत जाति
मर्दों से कुछ कम है। □